National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.multidisciplinaryjournal.org
ISSN: 2455-9040
Received: 10-10-2023, Accepted: 26-10-2023, Published: 11-11-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 179-180

# हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श

**कविता तुकाराम चानकने**
हिन्दी विभाग, जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, महाराष्ट, भारत

**सारांश**
मनुष्य और पर्यावरण के घटकों से गहरा नाता है। प्रत्येक मनुष्य जीव पर्यावरण के साथ जुड़ा हुआ है और मृत्यु के बाद पर्यावरण में समाहित हो जाता है। पर्यावरणीय शिक्षा से भावी पिढी के हृदय में पर्यावरणीय जागरूकता, प्रेमभाव और उसे सुरक्षित रखने के लिए सजगता का भाव उत्पन्न कर सके। पर्यावरण सुरक्षा लिए रचनात्मक सहभागिता को ओर आकर्षित कर सकते हैं। पर्यावरण के साथ शिक्षा का सहसंबध समझने के लिए उससे सबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। कमलेश्वर जी के उपन्यासों में नैतिक मूल्यों और आदर्शों एवं आधुनिक व्यवहारिक मूल्यों के बीच की टकराहट उनसे उत्पन्न संघर्ष तथा तनाव का चित्रण सूक्ष्मता से किया हैं। उन्होंने केवल वर्तमान जीवन की पीड़ाओं, संघर्षों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त नहीं किया बल्कि उनके खिलाफ़ आवाज उठाने की प्रेरणा भी दी है।
उपन्यास के कथानक में स्वतंत्रता के बाद विलानीकरण निती के कारण राजघरानों एकाधिकारशाही की नींव हिलने लगी। राजशाही और लोकतान्त्रिक मूल्यों में संघर्ष उत्पन्न होने लगा। राजशाही और सामंती घरानों की पर्यावरण के घटकों पर अपना अधिकार जताकर उसका इस्तेमाल अपनी राजशाही शान की आमदनी बढ़ाने का अपने मनोरंजन का साधन मान लिया था। दूसरी ओर महारानी राजलक्ष्मी तथा उनके संस्कारों की छवि समीरा दोनों के मन में प्रकृति तथा पछियों के प्रति अनन्य प्रेम दिखाई देता है। राजशाही घरानों की महारानी और राजकुमारी पक्षियों रक्षण और प्रकृति के पशु और प्राणियों को बचाने का प्रयास करते हैं। कथानक में एक ओर सामंती राजशाही व्यवस्था को बचाने के लिए पर्यावरण को खतरे में डाला जा रहा है; वही दूसरी ओर पर्यावरण बचाने के लिए जीवन को समर्पित किया जा रहा है, इनके संघर्ष को उपन्यास "अनबीता व्यतीत" में चित्रित किया गया है।

**मूल शब्दः** पर्यावरणीय जागरूकता, प्रेमभाव, उपन्यास

## प्रस्तावना
भारतीय संस्कृति की नींव पर्यावरण पोषक वातावरण को महत्व देता है, तो साहित्य पर्यावरणीय संवेदनशीलता को बढ़ावा देता है। पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है। मानव अपनी जरूरतों के लिए पर्यावरणीय संसाधनों पर निर्भर है। उसका पर्यावरण से जुड़ाव केवल भौतिक उन्नति तक सिमित नहीं है बल्कि भावनिक, वैचारिक, मानसिक तौर पर भी पर्यावरण से जुड़ा है। पर्यावरण और प्रकृति का ज्ञान मानव अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक बन गया है। पर्यावरणीय शिक्षा से भावी पिढी के हृदय में पर्यावरणीय जागरूकता, प्रेमभाव और उसे सुरक्षित रखने के लिए सजगता का भाव उत्पन्न कर सके।पर्यावरण सुरक्षा लिए रचनात्मक सहभागिता को ओर आकर्षित कर सकते हैं। पर्यावरण के साथ शिक्षा का सहसंबध समझने के लिए उससे सबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। नागरीकरण, औद्योगिकीकरण और वैज्ञानिक प्रगति का गहरा प्रभाव पर्यावरण पर हो रहा है। पर्यावरणीय समस्या धीरे–धीरे रौद्र रूप धारण करे उससे पूर्व हमें सभी मानवजाति को इसके प्रति अवगत कराना होगा। शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण और मानव जीवन के बीच सामंजस्य बनाकर पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते है। पर्यावरण की समस्याओं को केंद्र में रखकर उनके प्रति सुरक्षा को बढ़ावा देने में कमलेश्वर जी का साहित्य अहम् भूमिका निभाता है।
कमलेश्वर जी एक यथार्थवादी उपन्यासकार है। कमलेश्वर जी के उपन्यासों में नैतिक मूल्यों और आदर्शों एवं आधुनिक व्यवहारिक मूल्यों के बीच की टकराहट उनसे उत्पन्न संघर्ष तथा तनाव का चित्रण सूक्ष्मता से किया हैं। उन्होंने केवल वर्तमान जीवन की पीड़ाओं, संघर्षों को अपने साहित्य में अभिव्यक्त नहीं किया बल्कि उनके खिलाफ़ आवाज उठाने की प्रेरणा भी दी है। पर्यावरण समस्या को केंद्र रखकर मानव और पर्यावरण के परस्पर पूरक संबंधो तथा सहअस्तित्व के महत्त्व को वर्णित करनेवाला उपन्यास 'अनबिता व्यतीत'। उपन्यासकार कमलेश्वर जीने 'अनबिता व्यतीत 'उपन्यास आधुनिक दौर में पाश्चिमात्य संस्कृति के अंधानुकरण से उत्पन्न की सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है। पर्यावरण का कोई मालिक नहीं होता इसलिए उसकी चाहे जीतनी हानि कर दो आपको रोकने वाला कोई नहीं होता। सामंतशाही के एकाधिकारवाद के चलते वह जंगल तथा वहाँ के जीवजन्तुओं अपना अधिकार मान लेते हैं। पर्यावरण पर इस अधिकारवादी प्रवृत्ति का विरोध इस उपन्यास में किया गया है। 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास संवेदना की धरातल से होकर भारतीय संस्कृति के अहिंसा, शांतता जैसे मूल्यों की ओर समाज को उन्मुख कर देता है। मनुष्य तथा प्रकृति के पारस्परिक सहयोग, समायोजन तथा सहअस्तित्व से दुनिया में शांतता को बढ़ा सकते हैं।

## उपन्यास में वर्णित पर्यावरणीय समस्याएं
### 1. करुणा, अहिंसा मूल्यों का वर्णन
महारानी संवेदनशील और पक्षियों से प्रेम करने वाली तथा उनकी सुरक्षा के लिए तत्पर रहनेवाली नारी है। उसने अपने नातिन को भी वही संस्कार दिए है। महारानी अपने दीवानखाने के फ़र्श पर पड़े पक्षियों तथा मादा हिरणी की लाश देखकर बैचेन हो जाती है। भगवान की बनाई इस दुनिया में सभी जीवजंतुओं को जीवन जीने कजा सामान अधिकार मिला है परन्तु मानव उनसे यह अधिकार उनसे छीन लेते है। तब वह कहती है कि" हे भगवान ! जब तूने इन जीव –जन्तुओं को जीवन दिया था तो इन्हें इतनी शक्ति भी देता कि ये बेचारे अपने जीवन की रक्षा कर पाते। "मानव इतना असंवेदनशील तथा निर्दयी हो गया की उसे इनके दुःख दर्द का एहसास नहीं होता। वह क्रूरता से इनका

शिकार करता है। वह महाराज को शिकार करने से रोकती है यहाँ तक की बहेलियों के द्वारा पकडे गए पंछियों को ख़रीदकर उन्हें मुक्त करती है। काकातुआ के जोड़े के लिए पिंजरे की जगह सोने के झूले बनवाती है उनकी आजादी उन्हें अच्छी लगाती है। यहाँ तक की वे महाराज के द्वारा काकातुआ की हत्या करने पर [2]"महाराज किसी की जान लेना तो बहुत आसान है लेकिन मुश्किल है किसी को जिंदगी देना। "पैसो से जमींन जायदाद, संपत्ति ऐशो–आराम के सारे सुख खरीद कर दे सकते है किन्तु किसी के प्राण पैसो से वापस नहीं लाये जा सकते । "काकातुआ की मौत पर वह यह प्रश्न महाराज के सामने रखती है।[3] "क्या आप हमें इन मासूम पंछियों की जिंदगी लौटा सकते है ? उनका मन उन पक्षियों में इतना घुल मिल गया था की काकातुआ की हत्या का दर्द वह सहन नहीं कर पाई। अंत में वह महारानी की मृत्यु का कारण बन जाता है

## 2. सामंती व्यवस्था की एकाधिकारशाही –[4]

विदेशों के चिड़ियाघरों में पशु–पक्षियों की कितनी जबर्दस्त डिमांड है और हमारे देश में इनकी कोई कमी है नहीं। इनका कोई मालिक नहीं है, जो इनके पकडे जाने पर ऐतराज करें।" समीरा के पिता अपने राजशाही शान को बचाने के लिए पक्षियों की निर्यात व्यापार चुनते है। उनके अनुसार [5] "राजा, महाराजा और राजकुमारों का राजपूती धर्म पक्षी और प्राणियों की शिकार करना है। उनकी पुत्री महारानी राजलक्ष्मी के परवरिश में बौद्ध श्रावणिका बन गई है किंतु यदि उसने उनकी परवरिश पाई होती तो वह विशुद्ध क्षत्राणी होती।" उनके अनुसार गौतम बुद्ध का चेला बनाना और दिन –रात अंहिसा परमोधर्म के रह पर चलना उन्हें मंजूर नहीं। अपना काम बिना रोक–टोक चल सके इसलिए अपनी बेटी समीरा की शादी करा देते है। महाराज सुरेन्द्रसिंह भारतीय पुरातत्व विभाग की और से सर्वेक्षण के लिए आए सरकारी अधिकारीयों के बारें में ऐसी सोच रखते है।[6] "देखते हैं हमारे पूर्वजों की इन निशानियों को कौन हाथ लगता हैं ? हम उस हाथ को काट कर फेंक देंगे जो इनकी और बढ़ेगा।"

## 3. पाश्चिमात्य संस्कृति का अंधानुकरण

महाराजा जयसिंह तो नई पीढ़ी के आधुनिक युवक थे । उनका पक्षियों के नस्ल की सूक्ष्म निरिक्षण एवं जानकारी सुनकर समीरा बहुत प्रभावित हो जाती है। जयसिंह उनके पक्षी ज्ञान का उपयोग[7] "विदेशों में डिब्बाबंद गोश्त, जिन्दा –मुर्दा पक्षियों का एक्सपोर्ट, प्राणियों की चर्बी और खाल सप्लाई करने के लिए इस्तेमाल करते थे। "उनके अनुसार "हमारे देश में ही इन कामों पर उंगली उठाई जाती है। विदेशों में तो ऐसे सिर्फ एक व्यवसाय माना जाता है। "इससे जयसिंह पर पाश्चिमात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की प्रवृति झलकती है।

## 4. पक्षियों की विभिन्न जातियों का वर्ण

भारत में विदेशों से आनेवाले पछियों का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।[8]

"अंजन, खंजन, वाक, बगुला, हंस, महाबर, पीलकिया, भुजंगा, धनेश, चातक, पारावत, पंडुक, चकवा, मुर्गाबी, सरीसूर्प, क्रौंच, ख़ातिया, क्रेन ..... और न जाने कितने ! आवासी और प्रवासी पक्षियों का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।

## 5. एकाधिकार शाही और लोकतंत्र के बीच टकराव

दीवान द्वारिकादास गौतम से कहते है[9]"राजपाट छिन जाने पर भी सुमेरगढ राज्य में हमारे कानून चलते हैं, दिल्ली सरकार के नहीं। [10] "मैं जानता हूँ कुँवर जी। वैसे तो महाराज के नाम का दबदबा आज भी कायम है । पुलिस और कानून हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

## 6. पर्यावरण की हानि– [11]

"लिपकिन सारस प्रजाति का मांस खाने की लालच में ..... मुर्गाबी, तीतर की तरह शिकारियों ने इसके खानदान को ही नहीं, नस्ल को ही ख़त्म कर दिया ..... अब यह शायद ही कहीं देखने को मिलें।"

प्रस्तुत उपन्यास "अनबीता व्यतीत" में कमलेश्वर जी ने पर्यावरण की समस्याओं को केंद्र में रखकर भारतीय संस्कृति की नीव सहअस्तित्व, करुणा, अहिंसा जैसे मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। पर्यावरण किसी की निजी संपत्ति नहीं है, उस पर अधिकार जताना, उसका अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करना, उसको क्षति पहुँचना, मानवता धर्म और अंहिसा, करुणा जैसे मूल्यों की अवहेलना करना है।उपन्यास का कथानक पक्षियों के प्रति प्रेम, पशु – प्राणियों की शिकार पर रोक, उनके दर्द के प्रति समानुभूति रखने का संदेश देता है।पर्यावरण में सभी को जीवन जीने का समान अधिकार है, वह उन्हें मिलाना चाहिए। मानव जीवन और पर्यावरण एक–दूसरे के पूरक है।

## संदर्भ सूची


1. विकिपीडिया
2. 1, 2, 3, 4 अनबीता व्यतीत पृ. क्र. 24, 27, 65, 68
3. 5, 6, 7, 8 अनबीता व्यतीत पृ. क्र.,26 71, 14, 88
4. 9, 10, 11 अनबीता व्यतीत पृ. क्र.102, 106111,
5. www-academia-edu
6. .अनबीता व्यतीत में पर्यावरण प्रदुषण –लंबोधरन पिल्लै.बी . पूर्वाभास